अनमोल महिला दूध समिति: एक सफलता की कहानी

एक अच्छे पारिवारिक पृष्ठभूमि से आई कुछ महिलाओं ने करनाल के पास अमृतपुर केलन गांव में साथ मिलकर वर्ष 2003 में एक समूह गठन किया । हरपाना ट्रस्ट ने महिलाओं को संगठित करने के लिए पहल की है और उन्हें कुछ उद्यमी गतिविधि करने के लिए प्रेरित किया है। समूह के सदस्यों ने महसूस किया है कि दूध आधारित गतिविधि शुरू करने के दो कारण है (i) उनके गांव में पर्याप्त दूध उत्पादन और (ii) दूध उत्पादकों को दूध के लिए उचित मूल्य नहीं मिल पाना है। एनडीआरआई - करनाल ने इस गांव की चयनित महिलाओं को मूल्यवर्धित डेरी उत्पादों पर तीन महीने का प्रशिक्षण प्रदान किया है। इस क्षेत्र की क्षमता को देखते हुए महिला समूह ने शुरुआत में अनमोल महिला दूध समिति के नाम पर एक दूध संग्रह केंद्र शुरू किया है। हरपाना ट्रस्ट ने ऋण के रूप में 1.5 लाख रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की है। समूह ने अपने उद्यम से संबंधित विभिन्न वस्तुओं जैसे वजन मशीन, वसा अलग करने का मशीन, फ्रिज, सिलेंडर, जहाजों और विभिन्न आकारों के दूध के डिब्बे खरीदे हैं। उन्होंने किसानों से 20 लीटर दूध संग्रह शुरू किया और 500 लीटर दिन तक पहुंचे। उन्होंने दूध को 20 रुपये लीटर से खरीदना शुरू किया जब स्थानीय बाजार में दूध की कीमत केवल 12 रु. लीटर थी। वे 20 रु. लीटर से गाय का दूध खरीदते हैं और इसे 28/ - रुपये तक बेचते है, जबकि वे भैंस के दूध को 35 रुपये प्रति लीटर से खरीदते हैं और इसे 45/ - रुपये में बेचते हैं। करनाल शहर एनडीआरआई द्वारा दिए गए प्रशिक्षण और आत्मविश्वास के आधार पर, अनमोल महिला समिति ने एनडीआरआई से तकनीकी बैक स्टॉप के साथ खोआ, पनीर, दही, मक्खन, घी इत्यादि जैसे मूल्यवर्धित उत्पादों की तैयारी शुरू कर दी है। तैयार किए जाने वाले मूल्यवर्धित उत्पादों की मात्रा का निर्धारण उनके द्वारा प्राप्त मांग और आदेश के आधार पर किया जाता है। वे अपने उत्पादों के विपणन के लिए एनडीआरआई छात्रावास, विवाह पार्टियों, होटल / ढाबा, मशहूर मिठाई स्टालों (जैसे गुप्त मीठा, ए -1 मिठाई) आदि जैसे संस्थानों से संपर्क करते हैं। दिवाली जैसे उत्सव के मौसम प्रभावी रूप से उनके द्वारा निर्मित दूध उत्पादों की बिक्री के लिए उपयोग किए जा रहे हैं। चूंकि वे उत्पादों की शुद्धता और गुणवत्ता बनाए रखते हैं, इसलिए बाजार में उनके उत्पादों की निरंतर मांग है। श्रीमती सविता, अनमोल महिला दूधि समिति के सचिव ने हर्ष के साथ कहा कि, प्रत्येक सदस्य अपने परिवार की देखभाल और घरेलू कार्य के अलावा 5000/- से 6000/ - रुपये तक मासिक आय कमाता है। उन्होंने आगे व्यक्त किया कि सभी सदस्य के एक परिवार के रूप में काम करते हैं और दूध संग्रह जैसे कार्यों को आपस में बांट लेते है, पुस्तक रखरखाव, मूल्य वृद्धि इत्यादि को तीन महिलाएं सुबह 6 बजे से शाम 3 बजे तक और अन्य तीन 3 बजे से शाम 8 बजे तक काम करती हैं। शेष एक सदस्य जो समूह नेता सुश्री कमलेश हैं, दूध प्राप्त करने से लेकर पास के शहर करनाल में मूल्यवर्धित डेयरी उत्पादों को बेचने तक के पूरे मार्केटिंग गतिधियों को संभालती हैं।

समूह के सदस्यों का कहना है कि उद्यम प्रारंभ के दिनों में उन्हें परिवार के सदस्यों एवं गांव वालों का समर्थन प्राप्त नहीं हुआ । लेकिन दृढ़ संकल्प के कारण, वे मूल्यवर्धित डेयरी उद्यम में सभी बाधाओं को पार करते हुए सफल हुई हैं। प्रारंभिक दिनों में उनके द्वारा सामना की गई समस्याओं से उन्हें अच्छी सीख मिली है। अब, वे स्वयं को आर्थिक और सामाजिक रूप से अधिक सफल, लाभप्रद और सशक्त महसूस करते हैं।

महिला समूह ने महसूस किया कि एनडीआरआई प्रशिक्षण ने उन्हें इस उद्यम बनाने में मदद की है। इसने उन्हें सशक्त बनने में मदद की है, आस-पास के गांवों में अन्य महिलाओं के लिए आदर्श मॉडल बना दिया है और महिलाओं के बारे में सभी सामाजिक रूढ़िवादों को तोड़ने में भी मदद की है। सफल महिला समूह ने कहा कि उनकी बचत में वृद्धि हुई है; उनके परिवार की स्थिति में सुधार हुआ है और अपने बच्चों के लिए उच्च शिक्षा प्रदान करने में सक्षम हुए है। महिला समूह अधिक लाभ को सुनिश्चित करने के लिए जल्द ही दूध उत्पादों की पैकेजिंग शुरू करने की योजना बना रही है।

उन्होंने अपने उद्यम चलाने में आनेवाली अड़चनों को भी व्यक्त किया, जैसे कि उन्हें विपणन के लिए लंबी दूरी की यात्रा करना है, जो उनके व्यय को बढ़ाती हैं, यात्रा में समय बर्बाद होते हैं, वाहन के किराए पर बहुत पैसा खर्च करना पड़ता हैं क्योंकि उनके पास खुद का वाहन नहीं हैं, ब्रांडेड उत्पादों से कठोर प्रतिस्पर्धा का सामना करना, प्रसंस्करण के लिए कोई जगह नहीं हाना आदी, श्रीमती सीमा एक सदस्य ने आग्रह किया कि सरकार को प्रदर्शनी / त्यौहार में स्टाल रखने के लिए उनका समर्थन करना है, और अपने उद्यम को आगे बढ़ाने के लिए वातानुकूलित वैन और सब्सिडी दरों पर ऋण प्रदान करना है।

इंटरनेट और पाठ्यपुस्कों से छत की ओर

प्रकृति और पौधों के जुनून ने छत पर बागवानी शुरू करने के लिए हैदराबाद के वनस्थलीपुरम के निवासी श्री प्रताप गौड़ को प्रेरित किया है। वह एक इंजीनियर है और वर्तमान में हैदराबाद और बैंगलोर में स्थित सॉफ्टवेयर कंपनियों को परामर्श सेवाएं प्रदान रहे है। बागवानी के लिए उनका बहुत जुनून है, खासकर विदेशी फलों और सब्जियों की खेती का एक दिन इंटरनेट पर सर्फ करते समय उन्हें हाइड्रोपोनिक और उसके लाभ के बारे में पता चला । इस विषय के बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए यूट्यूब, किताबों आदि में ढूंढा और खेती के तरीके, पौधों के पोषक तत्वों का प्रबंधन और मिट्टी वाले क्षेत्रों में पौधों के विकास के लिए आवश्यक अन्य आवश्यकताएं आदि पर अधिक जानकारी के लिए उन्होंने अपनी खोज जारी रखी। वह प्रयोग करना चाहते थे उन्होंने विभिन्न स्रोतों से जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त किया है, उसके आधार पर उन्होंने हाइड्रोपोनिक प्रणाली का उपयोग करके अपने छत पर एक छोटा बगीचा शुरू किया। उन्होंने विभिन्न प्रकार की कैप्सिकम (लाल, हरा, पीला) लगाया और अद्भुत परिणाम प्राप्त किए। पौधों के विकास को ध्यान में रखते हुए उन्हें बगीचे के अपने सिस्टम में कुछ संशोधन करना पड़ा। इसके अलावा उन्होंने हरी पत्तेदार सब्जियां, कैप्सिकम, ककड़ी, टमाटर इत्यादि के लिए बाटो बाल्टी सिस्टम, क्रेटकी ट्रे सिस्टम, पोषक तत्व प्रौद्योगिकी प्रौद्योगिकी इत्यादि हाइड्रोपोनिक्स के विभिन्न तरीकों की कोशिश करके बगीचे का विस्तार किया।

एक पारंपरिक किसान का जैवी किसान में परिवर्तन

गदिराजू रामकृष्णमराजू, गोलकोदरू गांव, पालकोदरू मंडल, आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले के 48 वर्ष के स्नातक हैं। परंपरागत खेती से जैविक खेती में परिवर्तित कर लिए हैं और इसे अधिक टिकाऊ और लाभदायक पाए हैं। राजू के पास दो स्थानों पर 18 एकड़ जमीन है और उसके पास तीन देसी गाये हैं। एक स्थान पर वह नहर के पानी से सिचाई कर रहा है और दूसरे में वह बोर पर निर्भर है। वह छह एकड़ में धान बीपीटी 5204 और 10 एकड़ में केले (चक्करकेली, कर्पूरम) और दो एकड़ में रतालू बढ़ा रहे है। उन्होंने केले के बागान में अंतर फसल के रूप में उड़द लगाया है।

राजू, स्नातक होने के तुरंत बाद, खेती करने लगा और लगभग दो दशकों तक परंपरागत खेती जारी रखी। इस अवधि के दौरान, उन्होंने फसलों में कीट और बीमारी के प्रकोप में वृद्धि, फसल की पैदावार में ठहराव और खेती की बढ़ी हुई लागत का अनुभव किया जिसके परिणामस्वरूप आय में कमी और हानि हुई है। जब वह खेती में कठिनाइयों को दूर करने के विकल्पों की तलाश में थे, तो उन्हें पालेकर जी की खेती की व्यवस्था के बारे में पता चला और श्री पालेकर द्वारा आयोजित कुछ प्रशिक्षणों में भाग लिये।

श्री पालेकर से अपनाए गए कुछ महत्वपूर्ण कृषि पद्धतियां हैं: रासायनिक उर्वरकों का उपयोग बंद करना, फार्म यार्ड खाद (एफवाईएम) का उपयोग करना, हरी खाद बढ़ाना और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए इसे मिट्टी में शामिल करना, गाय का गोबर, जीवामृत पौधों से प्राप्त उर्वरकों का उपयोग।

प्रथाओं का विवरण हैं:

1. अनाज और दालें के मिश्रित बीज मैदान में हरी खाद के रूप में बोना।
2. मिट्टी को समृद्ध करने के लिए रोटावाटर का उपयोग करके मिट्टी में शामिल करना।
3. धान, केले और रतालू की खेती।
4. केले के खेतों में, उन्होंने हरी खाद फसलों को उगाया है, उन्हें पुष्पित होने की दशा में काट कर मिट्टी के साथ ढक दिया और मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाने के लिए इस ग्रीन मेन्यूर विघटन के लिए जीवामृत भी उस पर छिड़क दिया गया है।

जीवामृत साथ एफवाईएम और हरा खाद डालने से मिट्टी की स्थिति में सुधार हुआ और अच्छे परिणाम पाए गए। किसान के मुताबिक, यदि हम हर महीने जीवामृत डालते हैं, तो कोई अन्य अतिरिक्त इनपुट की आवश्यकता नहीं होती है।

किसान सीताफल, नीम, तुलसी (तुलसी), पोंगामिया, धतुरा, कैलोट्रोपिस और तम्बाकू की पत्तियों से पौधे के अर्क तैयार करता है। वह जिस प्रक्रिया का पालन करता है वह है: वह सभी उपरोक्त सामग्री को एक साथ पीसता है, 10 लीटर पानी में उबालता है, गाय मूत्र के साथ मिश्रण करता है और किण्वन के लिए एक या दो दिनों तक रहता है। छिड़कते समय, वह 20 लीटर पानी के साथ आधे लीटर फ़िल्टर किए गए मिश्रण मिलाकर फसल में कीट और बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए फसल पर छिड़काव करता है।

वह धान की फसल में स्टेम बोरेर को नियंत्रित करने के लिए लहसुन + मिर्च के अर्क भी डालता है। आधा किलोग्राम लहसुन, दो किलो हरी मिर्च और तम्बाकू गो मूत्र में मिला देते हैं। स्टेम बोरर को नियंत्रित करने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। उन्होंने कीट और बीमारियों का प्रबंधन करने के लिए गाय मूत्र के साथ नीम का तेल भी मिलाया इस अभ्यास को अपनाने के बाद अपनी फसल को कोई जोखिम नहीं मिला।

उन्होंने जैविक खेती में वर्षों से फसल पैदावार में क्रमिक वृद्धि को महसूस किया, हालांकि प्रारंभिक वर्षों में उन्हें अच्छे नतीजे नहीं मिले। फिर भी, किसान को जैवी खेती ने पारंपरिक विधि की तुलना में अधिक मुनाफा दिया है, क्योंकि खेती की लागत जैवी खेती में कम है और उपज में प्रीमियम मूल्य भी प्राप्त होता है।

प्रभाव:

1. किसान ने अपने प्रथाओं के कारण मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार देखा।

2. खेती की लागत कम हुई है और अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद मिल रहे हैं, जिसमें अच्छी शेल्फ लाइफ है।

3. खेती से आय एक वर्ष के बाद दूसरे वर्ष तक धीरे-धीरे बढ़ रही है।

जेवी खेती के मुद्दे:

1. किसान के अनुसार, अपने खेतों में अधिक खरपतवार की वृद्धि हुई है।

2. उन्होंने यह भी देखा कि परंपरागत तरीकों के माध्यम से उगाए जाने वाले विविधता की तुलना में केले की फसल को फसल से पहले परिपक्व होने में दो महीने का अतिरिक्त समय लगता है।

कल्याण नगर, हैदराबाद के निवासी श्री रामराजु का केस स्टडी

पिछले दो सालों से, हैदराबाद के कल्याण नगर में रहने वाले 64 वर्षीय श्री रामराजु को बागवानी विभाग द्वारा बेस्ट स्मॉल स्केल टैरेस गार्डन प्रैक्टीशनर उपाधि से सम्मानित किया गया है। पंद्रह साल पहले, उसके घर में पार्किंग की जगह खाली थी और इस जगह का उपयोग करने के लिए उन्होंने पौधों को बढ़ाना शुरू कर दिया। परंतु, जब किरायेदारों ने अपने वाहनों को पार्क करने के लिए पार्किंग की जगह का उपयोग करना शुरू किया, तो उन्होंने पौधों को छत के ऊपर स्थानांतरित कर दिया। उन्हें तेज गति से पौधे बढ़ाने का अद्भुत परिणाम मिला और वे पौधे स्वस्थ भी थे। उन्होंने सोचा कि, ऐसा इस लिए हुआ कि सूरज की रोशनी पौधों पर आवश्यक मात्रा में प्राप्त होना है। धीरे-धीरे, उन्होंने अपनी छत पर पौधों की विभिन्न किस्मों को जोड़ना शुरू कर दिया और आज वह एक अद्भुत बगीचे के मालिक है। वे विभिन्न प्रकार के पौधों जैसे सजावटी, फल, सब्जियां, क्रीपर, वन प्रजाति आदि को विकसित करते है।

वर्तमान में, उनके छत पर लगभग 350 गमलों में 110 किस्मों के पौधों हैं। अपने घर में सब्जियों और फलों की आवश्यकता का महत्वपूर्ण भ्रण उनके छत के बगीचे से मिलता है। पौधों के अलावा, वे अपने छत पर पक्षियों, मछली, कछुए आदि का भी पालन करते है। अपने छत के शीर्ष बगीचे की बेहतर देखभाल करने के लिए, उन्होंने छत पर एक छोटा सा कमरा बनाया है और अपना अधिकांश समय वहीं गुजारते है। वे अपने छत के बगीचे के लिए दिन में कम से कम तीन घंटे समर्पित करते है। उनका मानना है कि छत का बगीचे न केवल रासायनिक मुक्त और ताजा सब्जियां और फल प्रदान करता हैं बल्कि शारीरिक परिश्रम के रूप में भी मदद करता हैं और तनाव से राहत मिलता हैं।

बगीचे के रखरखान के लिए, गमलों को भरने, छत पर मिट्टी को बदलने आदि के लिए उन्होंने एक वयक्ति को नौकरी पर लगाया है। उनके छत का बगीचों का कीट और बीमारियों से मुक्त है, क्योंकि वे हर 15 दिनों में एक बार नीम के तेल का उपयोग करते है और किसी भी रसायन का उपयोग नहीं करते है। वे कहते है कि "कई बार, पक्षी मेरे बगीचे में आते हैं और मैं उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाता"। जब भी, कीट की संभावना होती है तो वे उन्हें यांत्रिक रूप से हटा देते है। वर्तमान में, वह रोपण के लिए सीमेंट, प्लास्टिक और मिट्टी के गमलों का उपयोग कर रहें है। हालांकि, भविष्य में, वे बदले में लकड़ी से बने बक्सों को दिखाकर उपयोग करना चाहते है। हैदराबाद में उनके छत पर बगीचे लोकप्रिय हो गए हैं, और कई लोगों को स्फूर्तीदायक बन गया है।

केस स्टडी: उप्पल, हैदराबाद के निवासी श्रीमती रमाज्योति

श्रीमती रमा ज्योति और उनके पति ने अपने शुरुआती दिनों में जैवी खेती को बढ़ावा देने वाला एक गैर सरकारी संगठन के साथ काम किया। धीरे-धीरे उन्हें छत पर बागवानी और इससे होने वाले लाभों में दिलचस्पी लगी और उन्होंने अपने छत के ऊपर अपने बगीचे की शुरुआत की। चूंकि वे एक किराए के घर में रह रहे थे और जगह थोड़ी सी थी, यह अच्छी तरह से काम नहीं कर सके । जब उन्होंने उप्पल, हैदराबाद में अपना घर बनाये थे तो उनका जैविक उद्यान होने का सपना सच हो गया। उनका छत का बगीचा घर की दूसरी और तीसरी मंजिल पर स्थित है।

श्रीमती रमा ने अपनी नौकरी छोड़ दी, वे कभी-कभी प्रिंट मीडिया के लिए भाषा अनुवादक के रूप में काम करती है। वह बगीचे के लिए दिन में कम से कम दो घंटे का समय निकालती है। वह आगे पौधो को बढ़ाने के लिए अपने खुद के छत के बगीचे से बीज इकट्ठा करना पसंद करती है और किसानों से जैवी बीज भी एकत्रित करती है। उसने अपने छत के बगीचे पर हरी पत्तेदार सब्जी, बैंगन, टमाटर, प्याज, कैप्सिकम इत्यादि लगाई है। वह कुछ सब्जीयों को धूप में सुखाकर उनके नहीं मिलने के समय उपयोग करती है । वह महसूस करती है कि रसोई कचरा पौधों के लिए सबसे अच्छा खाद है। वह कीट और बीमारियों से निपटने के लिए बागवानी विभाग से तकनीकी सहायता लेती है। उसका टैरेस गार्डन अब चार साल का है और श्रीमती रमा कहती हैं, "मैं चाहती हूं कि मैं अपने परिवार और बच्चों को स्वस्थ रखें और यह एकमात्र प्रेरणा है जिसने मुझे इतने लंबे समय तक छत पर बागवानी को जारी रखने के लिए प्रेरित किया है।" उन्होंने कहा कि कठोर ग्रीष्म ऋतु, पानी की कमी, कबूतरों और बंदरों के कारण शहरी क्षेत्र में छत पर बाग स्थापित करना आसान नहीं है। हालांकि, उनका कहना है कि आपकी प्रेरणा, उत्साह और प्रतिबद्धता आपको अपने छत के बगीचे को बनाए रखने में मदद करेगी।

प्रकृति प्रेमी अभिभावकों से प्राप्त सीख

प्रकृति कई लोगों के जीवन का हिस्सा है और अक्सर बच्चे अपने माता-पिता के तरीकों को अपनाते हैं। ऐसा एक उदाहरण मिस अश्विनी, 25 वर्ष सफल शहरी कृषि व्यवसायी है। लंबे समय से उसके माता-पिता ने हैदराबाद शहर में एक घर बनाया था और बागवानी के लिए एक अच्छी जगह छोड़ी थी, ताकि उनके बच्चे प्रकृति, बागवानी का अनुभव कर सकें और इसके लाभ सीख सकें। अपने माता-पिता की अपेक्षाओं के अनुसार, मिस अश्विनी उन सभी गुणों के साथ बड़ी हो गइ हैं। अपने बचपन से वह बगीचे की विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से अपने माता-पिता की मदद कर रही थीं और आज वह अकेली व्यक्ति है जो बगीचे का ख्याल रख रही है और फूलों, फलों, सब्जियों आदि की नई किस्में पेश करके इसे विस्तारित करती है क्योंकि उसके माता-पिता बगीचे को बनाए रखने के लिए समय नहीं दे पाते हैं ।

समय के साथ, परिवार की जरूरतों और आवश्यकताओं में वृद्धि हुई है और उन्हें अपने घर का विस्तार करना पड़ा, जिसके कारण बागवानी के लिए छोड़ी गई जगह कम हो गई है। हालांकि, अश्विनी को बागवानी के साथ जारी रखने का एक नया तरीका मिला, उसके माता-पिता ने नेट हाउस का निर्माण किया है, जहां वह बागवानी जारी रख सकती है, जो घर की पहली और दूसरी मंजिल की छत पर है। टैंक के माध्यम से पानी की आपूर्ति के लिए प्रावधान किया गया था। पेशे से, अश्विनी एक फुड साइन्टिस्ट है और बगीचे में विभिन्न पोषक तत्वों से समृद्ध और आवश्यक फल और सब्जियों को लगाकर अपने बगीचे में एक ही ज्ञान का उपयोग कर रही है।

बागवानी में शामिल है पूरा परिवार

केवल कुछ ही ऐसे परिवार हैं जिनमें से प्रत्येक सदस्य बागवानी में शामिल है और इनमें से एक श्रीमती अर्चना का परिवार है। वह बी.टेक स्नातक हैं और वर्तमान में हैदराबाद के मेहदीपटनम क्षेत्र में एक पेंटिंग स्कूल चला रही हैं। मिस अर्चना ने अपनी मां से बागवानी सीखी और शादी के बाद उसने अपने ससुराल वालों के साथ बागवानी जारी रखी, जिन्हें बागवानी से लगाव है । उसके पति भी अपने बचपन से बागवानी में दिलचस्पी रखते है। हालांकि, शहरी वासियों के पास आरामदायक विभिन्न सुविधाएं हैं, परंतु प्रदूषण, उच्च तापमान जैसी कुछ समस्याएं भी हैं। मिस अर्चना के परिवार द्वारा वही समस्याएं सामने आईं, इसलिए उन्होंने इनडोर पौधों को अपने सीढ़ियों और अन्य जगहों में रखना शुरू किया । इसके बाद, उन्होंने अपने घर में धूल की समस्या काफी कम होते देखा। इसके बाद, उन्होंने अपने छत पर पौधों को बढ़ाना शुरू किया, ताकि वे अपने घर के उपड़ी मंजिल के कमरों का तापमान नियंत्रित कर सकें। अब उनकी छत पर का उद्यान चार साल का है और परिवार के हर सदस्य को इसे बनाए रखने की ज़िम्मेदारी महसूस होती है। मिस अर्चना कहती हैं, "मेरे 4 साल का बेटा भी मुझे बगीचे में मदद करता है और जब भी उसका खाना छत की सब्जियों से होता है, तो वह गर्व से अपने दोस्तों को बताता है"। इस बगीचे को बागवानी विभाग, तेलंगाना द्वारा 2014 में "बेस्ट मेइन्टैन्ड गार्डन" के लिए सम्मानित किया गया था। उन्होंने पिछवाड़े और छत के बगीचे को बनाए रखने में अपने ड्राइवर और नौकरानी के योगदान को भी स्वीकार किया।

किराये पर खेती के माध्यम से गरीब से अमीर बने रामास्वामी की सफलता की कहानी

67 वर्षीय रामास्वामी एक संसाधन (जैसे जमीन, घर, लाइव स्टॉक इत्यादि) विहीन कृषि मजदूर है। जो पूरी तरह से अपने जीवन यापन के लिए कृषि मजदूरी पर निर्भर है। वह तमिलनाडु के ई-रोड जिले के भवानी तालुक, पुनाची गांव के निवासी हैं। वह अपने माता-पिता का सबसे बड़ा बेटा है, उन्हें एक छोटे भाई और पांच बहनें। रामस्वामी ने अपने पिता और पूरे परिवार की आमदनी का समर्थन करने के लिए तीसरी कक्षा के बाद अपनी स्कूली शिक्षा बंद कर दी है। शादी के बाद रामास्वामी ने अपनी मूल गावें छोड़कर पत्नी और बड़े बेटे के साथ वर्ष 1 9 78 में पमक्कन जिले के पल्लीपालयम ब्लॉक के कदचनल्लूर गांव में आजीविका की तलाश में आ पहूँचे । प्रारंभ में, उन्होंने कुछ खेतों में एक मजदूर के रूप में काम किया। चूंकि उनके दूसरे बेटे और दो बेटियों के जन्म के बाद उनके परिवार के व्यय में वृद्धि हुई है, इसलिए उन्होंने अपने परिवार का पोषण करने के लिए आय के वैकल्पिक स्रोतों की तलाश शुरू कर दी। 30 साल की उम्र में, रामास्वामी ने स्थानीय किसान से लीज पर 3 एकड़ भूमि ली और बारिश की स्थिति के तहत क्षेत्र फसलों की खेती शुरू कर दी। धीरे-धीरे उन्होंने स्थानीय किसानों के साथ अच्छे संबंध विकसित किए और पट्टे पर कुछ और एकड़ जमीन ली और अपने परिवार के सदस्यों की मदद से खेती जारी रखी। **37 सालों में उन्होंने 9 किसानों से खेती के लिए 56 एकड़ जमीन एकत्र की है।** पिछले 10 वर्षों से वह भूमि के मालिकों के साथ अपनी किरायेदारी को नवीनीकृत करते हुए 56 एकड़ जमीन पर लगातार खेती कर रहा है। 56 एकड़ में से केवल 1.5 एकड़ बोर वेल और तेल इंजन की मदद से सिंचित है। चूंकि वह मालिक नहीं है, इसलिए उसने बिजली कनेक्शन और बोर बेल के लिए कोशिश नहीं की। शेष 54 एकड़ पूरी तरह से वर्षाधारित है जिसमें रेडग्राम के साथ मूंगफली उगाए जाते हैं। लीज राशि प्रति वर्ष 1000 रुपये प्रति एकड़ है। रामास्वामी अभी तक एक किरायेदार किसान के रूप में रहे और उन्होंने कभी भी जमीन नहीं खरीदी लेकिन वह जो कर रहे हैं उससे खुश हैं। वह जिन फसलों को बढ़ा रहे है उसका विवरण इस प्रकार है:

मूंगफली (शुद्ध फसल): 15 एकड़, मूंगफली + रेडग्राम: 15 एकड़, लाल ग्राम (शुद्ध फसल): 15 एकड़, तिल: 10 एकड़, लाबिया: 1 एकड़, हरा ग्राम: 1 एकड़, हॉर्स ग्राम: 1 एकड़ सोरगम: 3 एकड़ वह पशु फ़ीड के लिए छः एकड़ में चारा, ज्वार और पिलीपेसर (नाड़ी) बढ़ रहा है। 1.5 एकड़ सिंचित भूमि का उपयोग राज्य सरकार की बीज गुणात्मक योजना के तहत लाल ग्राम बीज (सीओआरजी 7) गुणा के लिए किया जाता है, जहां उन्हें एटीएमए और कृषि विभाग से तकनीकी सहायता मिलती है।

फसल की खेती के अलावा, उन्होंने विभिन्न पशुओं जैसे दुग्ध जानवरों (4 सिंधी गायों), भेड़ (27), बकरियां (30), पोल्ट्री पक्षियों (30) और बतख (4) के पालन को भी समान महत्व दिया है।

उनके फसल अभ्यासों में शामिल हैं:

• सभी फील्ड फसलों को बढ़ाना

• अरहर के साथ अंतर फसल के रूप में मूंगफली लगाना।

• विभागीय कार्यकर्ताओं की तकनीकी सलाह के अनुसार डीएपी, कॉम्प्लेक्स, पोटाश और जिप्सम के अलावा फार्म यार्ड खाद के रूप में गाय गोबर और भेड़ के गोबर का उपयोग करना।

• कीट नियंत्रण के लिए, आवश्यकतानुसार क्विलॉफॉस और मोनोक्रोटोफास का उपयोग करना

• मजदूर को लगाए बिना रामस्वामी स्वयं उर्वरक का छिड़काव व्यक्तिगत रूप से करते है। प्रति दिन वह 5 एकड़ में सुबह से शाम तक स्प्रे करने में सक्षम है। मजदूरी को बचाने के लिए रामास्वामी स्वयं अपने सभी 50 एकड़ में फसल में स्प्रे करता है।

• खरीफ के दौरान बारिश के मौसम के दौरान वह केवल एक फसल लेता है, रबी के समय वह परत बनने के लिए भूमि को छोड़ देता है।

• कृषि के अलावा, उन्होंने भेड़, बकरियां, मुर्गियों और बतख जैसे पशुओं का पालन और बेचकर अपने परिवार को बनाए रखने के लिए नियमित आय सुनिश्चित की। उन्हें साल भर में दूध बेचकर बहुत अच्छी आय मिलती है।

• कुल परिवार (6 सदस्य) कटाई के अलावा श्रमिको को किए बिना खेत पर नियमित रूप से काम कर रहे हैं।

• चूंकि उन्हें कृषि से पूरे वर्ष धन प्राप्त होता है (मूंगफली 3 महीने की फसल और अरहर 6 महीने की फसल), पूरे साल दूध और अलग-अलग मौसमों में विभिन्न पशुधन बेचते हैं, उनके पास बैंक ऋण जैसी कोई वित्तीय देनदारी नहीं होती है और कभी नहीं उधारदाताओं से कोई ऋण उधार लिया। वह के मालिकों से ब्याज के बिना अग्रिम ले जाएगा और फसल के बाद चुकाएगा।

• वे पशुओं का एकीकृत खेती प्रणाली का पालन कर रहे है जहां कृषि और पशुधन पूरे वर्ष एक-दूसरे का समर्थन कर रहे हैं।

• वह टीकाकरण अच्छा चारा और उन पर ध्यान देते हुए स्वस्थ का देख भाल कर रहा है।

• वह अपने नियंत्रणाधीन जमीन में पशुधन को मुफ्त चराई के लिए अनुमति दे रहा है।

• एक के बाद एक साल में वह खेत में खाद और खेत के अपशिष्ट को जोड़ रहा है, जो स्वाभाविक रूप से बायोमास विकसित करता है, जिसके परिणामस्वरूप मिट्टी की प्रजनन क्षमता बढ़ जाती है और अच्छी पैदावार होती है। (संदर्भ के लिए संलग्न अरहर क्षेत्र की तस्वीरें)।

अन्य विधियाँ:

• रामास्वामी और उनके परिवार द्वारा खेती के लिए पूर्ण समर्पणता

• यद्यपि उन्होंने गांव में एक पक्का घर का निर्माण किया है, फिर भी खेतों और पशुओं की देखभाल करने के लिए 24 घंटे खेत (एक शेड में) पर रहता है।

• अपने कृषि अनुभव के साथ समय की अवधि में मजबूत शक्ति और आत्मविश्वास हासिल होगा।

• खेत पर उनका व्यय न्यूनतम है क्योंकि वह पंप सेट / बोर वेल के लिए बिजली का उपयोग नहीं करता है, श्रम लागत आदि पर नगण्य व्यय कारता है।

• उसने न तो बैंकों के साथ और न ही उधारदाताओं के साथ कोई कर्ज लिया है।

• वह अपने बेटे की मदद से एक पुस्तक में अपने सभी खातों से संबंधित लेखा जोखा का विवरण लिखता है।

आय और संपत्तियां:

उनकी वार्षिक आय कृषि से लगभग 3 लाख रुपये और पशुधन पालन से 2.1 लाख रुपये है। उन्होंने अपने दो बेटों के लिए 40.00 लाख रुपये (25.00 + 15.00 लाख) के दो घर खरीदे हैं। इसके अलावा, उनके पास क्षेत्र और बाजार जाने जाने के लिए दो दोपहिया वाहन हैं। उन्होंने 15 स्वर्ण + दो मोटर बाइक + शादी के खर्च देकर बेटी की शादी दोनों की है

संक्षेप में, अगर हमें रामास्वामी की सफलता का वर्णन करना है, तो वह बिना किसी जमीन के किसान है, लेकिन कम वर्षा धारित परिस्थितियों में कम लागत वाली तकनीकों का पालन करके पूरे लगन के साथ किरायेदार किसान के रूप में 37 से अधिक वर्षों के लिए 56 एकड़ भूमि की खेती करके एक बहुत ही सुविधात्मक आजीविका प्राप्त कर रहे है।

कहानी में नैतिकता:

रामास्वामी ने साबित कर दिया है कि कड़ी मेहनत से जीवन में कुछ भी असंभव नहीं है। यदि आप अपने आप में विश्वास रखते हैं और सही तरीकों / प्रथाओं का पालन करते हैं, तो सफलता निश्चित है। रामास्वामी के आत्मविश्वास और उनकी सफलता को देखकर, जिन्होंने अपनी जिंदगी बना ली है और अपने बच्चों के लिए एक भी एकड़ जमीन के मालिक बने बिना अच्छी संपत्तियां भी अर्जित की हैं, किसी को भी जीवन में मुश्किल परिस्थितियों का सामना करने के लिए विशेष रूप से शुष्क भूमि की स्थिति में किसानों को प्रेरणा प्राप्त होगा।

रामास्वामी द्वारा प्राप्त आय और व्यय का विवरण

खेती पर व्यय

क्रम संख्या	कार्य का विवरण	व्यय (रुपये)
1	ट्रैक्टर खेती और बुवाई (किराए पर लिया गया) खेती - 3 बार; बुवाई - 1	1 1,10,000 = 00
2	घूमना और खरपतवार हाथ तने	54,000 = 00 30,000 = 00
3	फसल मूंगफली	27,000 = 00
4	गिंगली कटाई Gingelly Stalking और 20,000 = 00 सफाई	20,000 = 00 18,000 = 00
5	कीटनाशकों की लागत	50,000 = 00
6	रासायनिक उर्वरक जिप्सम सहित	51,000 = 00
	कुल	3,60,000 = 00
7	परिवार के सदस्यों की लागत (छः) श्रम लागत @ 60,000 / खरीफ सीजन / सदस्य	3,60,000 = 00
	कुल	7,20,000 = 00

प्राप्तियां

क्रम संख्या	रसीदों की क्रम	रसीद
1	ताजा मूंगफली के फलों की बिक्री से @ 1200 / बैग / 50 बैग	60,000 = 00
2	साठ बैग के सूखे मूंगफली के फलों का भंडारण करके मूल्य	1,20,000 = 00
3	गिंगेल 700 किलोग्राम @ 50 / किग्रा बिक्री करके	35,000 = 00
4	फसल के बाद 12000 किलोग्राम @ 70 / किग्रा फसल के बाद रेडग्राम बीजों की अपेक्षा की जाती है	8,40,000 = 00
5	चोलम स्ट्रॉ मूल्य	30,000 = 00
	कुल	**10,85,000 = 00**

कुल आय	10,85,000 = 00
कुल व्यय	7,20,000 = 00
कुल पट्टा राशि	56,000 = 00
शुद्ध आय (ए)	**3,0 9, 000 = 00**

पशुधन से आय

औसत आय / भेड़ / वर्ष	1,000X27 nos.	27,000 = 00
औसत आय / बकरी / वर्ष	1,000X30 nos.	30,000 = 00
औसत आय / गाय / माह	1,200X12 महीने	1,44,000 = 00
औसत आय / कुक्कुट (देसी पक्षी)	30 nos.	1,00,000 = 00
गाय गोबर का मूल्य + भेड़ का गोबर + कुक्कुट छोड़ना (प्रति वर्ष)		70,000 = 00
	कुल	**3,71,000 = 00**
रखरखाव और मवेशी फ़ीड की लागत कम लागत		1,50,000 = 00
शुद्ध आय (बी)		**2,21,000 = 00**

ग्रैंड कुल नेट आय (ए) + (बी) (3,0 9, 000 + 2,21,000)	5,30,000 = 00

संपत्तियों का अधिग्रहण	**रु. लाखों में**
दो घर = 25,00,000+ 15,00,000	**40,00,000 = 00**
दो भूखंड 4,50,000 प्रत्येक	**9,00,000 = 00**
दो मोटर बाइक	**1,00,000 = 00**
परिसंपत्तियों का कुल मूल्य (सोने को छोड़कर)	**50,00,000 = 00**

शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण जीवन की सुंदरता - केरल में एक पायलट परियोजना

नागार्थिल ओरु नटिनपुरम (शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण जीवन की सुंदरता) 2003 में शहरी क्षेत्रों में सब्जी और फल की खेती को बढ़ावा देने के लिए केरल के तिरुवनंतपुरम के वार्ड वज़ुथकाऊ में एक पायलट परियोजना के रुप में प्रारंभ की गई थी । श्री थॉमस मम्मोन ने इस परियोजना को चलाया और इसे सफल बना दिया। उन्होंने विभिन्न रणनीतियों को अपनाया है, जैसे कि कार्यालय के घंटों के बाद मजदूर वर्ग के लोगों के लिए कक्षाएं आयोजित करना, विशेष वर्मी-कंपोस्ट इकाइयों (कांक्रीट स्लैब और वृत्ताकार में तार जाल कवर) को डिजाइन करना, जैवी रसोई अपशिष्ट को खाद में परिवर्तित करना, बेरोजगार या अशिक्षित युवाओं को प्रशिक्षण देना और 'लेबर स्क्वाड' का गठन किया, जो गमले की मिट्टी का मिश्रण तैयार कर बैगों में भर कर रखेंगे।

इसके अलावा विशेष रुप से प्रशिक्षित क्षेत्र कर्मचारियों द्वारा घरों में बगीचों का रख-रखाव कर रहे व्यक्तियों के घर जाकर उन शहरी लोगों द्वारा अपने बगीचे सदाबहार रखने के आत्मविश्वास को बढ़ाने के कार्य किए जा रहे हैं । इन सभी प्रयासों ने परियोजना को एक बड़ी सफलता प्रदान की है और सार्वजनिक मांग पर इस परियोजना को पूरे तिरुवनंतपुरम में बढ़ाया गया हैं ।

दूसरे चरण में, परियोजना ने इन गतिविधियों को शैक्षिक संस्थानों और सरकारी कार्यालयों में उपलब्ध खाली भूमि में भी शुरू कर दिया। नए लेजिस्ट्रेटिव कॉम्प्लेक्स में सब्जियों की सफलता 2004 में शहर की बड़ी बात बन गया और इसके बाद परियोजना को राज्य के पांच नगर निगमों तक बढ़ा दिया गया। तिरुवनंतपुरम में शुरू हुआ एक तरंग लहरों में घूमने लगा । वर्ष 2011-12 और 2012 -13 में, परियोजना को केंद्र सरकार द्वारा राज्य बागवानी मिशन के माध्यम से वित्त पोषण प्राप्त हुआ। यह परियोजना अब भी कृषि विभाग, केरल और स्थानीय निकायों द्वारा लागू की जा रही है। वर्तमान में, **एक लाख** से अधिक घर अपने-अपने छतों पर सब्जियां बढ़ा रहे हैं।

श्रीमती भाग्या द्वारा छत पर बागवानी

भाग्य संतोष नगर, हैदराबाद के निवासी हैं, वह एक गृहस्थ और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की छात्रा हैं। अपने बचपन से ही वह बागवानी के प्रति रुची रखती थी। विवाह से पहले वह कुछ फूल और सब्जियां विकसित करती थीं। हालांकि, शादी के बाद पौधे उगाने के लिए घर में कोई जगह नहीं थी और न ही उसके परिवार के सदस्यों को इस कार्य में रूचि थी। एक दिन, 'साक्षी' अख़बार में उन्होंने शहरी कृषि से संबंधित एक लेख पढ़ा और इस विषय के बारे में अधिक जानकारी के लिए, बागवानी विभाग का उदाहरण दिया गया था। उसमें एक आशा उत्पन्न हुई कि वह अपने घर के सीमित जगह में सब्जियां उगा सकती है। अपने घर से बागवानी विभाग बहुत दूर था, लेकिन पहली बार अपने परिवार को सूचित किए बिना वह बाहर चली गई। चूंकि बागवानी विभाग सचिवालय के साथ असेंबली के पास है, वहां उच्च सुरक्षा थी और उसके लिए विभाग में प्रवेश करना आसान नहीं था, लेकिन जैसे तैसे उन्होंने बागवानी विभाग में प्रवेश किया और संबंधित बागवानी अधिकारी से मुलाकात की। इसके बाद उन्होंने बागवानी विभाग से छत पर बगीचे के लिए सब्सिडी किट लिया, जिसमें बीज, अंकुर, सिलपॉलिन कवर, पॉटिंग मिश्रण, नीम केक, नीम का तेल और अन्य आवश्यक उपकरण शामिल हैं।

उन्होंने अपने आप और अपने बच्चों की मदद से, दूसरी मंजिल पर छत पर बागवानी प्रारंभ किया। प्रारंभ में उन्हें अपने परिवार के सदस्यों से विरोध का सामना करना पड़ा और उनके लिए कई बार यह निराशाजनक लगा था। लेकिन उनकी आत्मनिर्भरता और उत्साह ने सभी को गलत साबित किया । समय के गुजरते पौधों में फल लगने लगा। इसे देखकर, उसके परिवार के सदस्यों ने छत के बगीचे में विशेष रूप से उनके पति में दिलचस्पी ली और छत के बगीचे की दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में उसकी मदद की। भाग्या जी का कहना हैं, "जब मुझे कीटों के हमले के कारण से बहुत सारी समस्याएं हुई और किसान कॉल सेंटर, बागवानी विभाग, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्लांट हेल्थ मैनेजमेंट इत्यादि जैसी समस्या को हल करने के लिए विभिन्न स्रोतों का इस्तेमाल किया गया। इन सभी प्रयासों के बाद मैं अपनी समस्याओं का समाधान खोजने में सफल रहा । वर्तमान में, आम तौर पर जैविक सब्जियों की मात्रा बढ़ रही है जो ताजा, पोषक समृद्ध और कीटनाशकों से मुक्त हैं "। शिक्षित होते हुए भी उन्होंने मानसिक एवं शरीरिक रुप से कई समस्याओं का सामना किया पर एक सामान्य महिला जो सीमित शिक्षण पाई हुई इसे कैसे अपनाएगी। इस समस्या के समाधान हेतु उन्होंने पहल कर आस पड़ोस की महिलाओं को स्वयं का बगीचा स्थापित करने में मद्द कर रही है। उन्हें तकनीकी और शारीरिक दोनों तरह की कई समस्याओं का सामना करना पड़ा, तो मामूली परिवार वाले इस अभ्यास को सीमित शिक्षा, जोखिम और समर्थन के बिना कैसे अपना सकता है। इसलिए, इस समस्या को हल करने के लिए उसने पड़ोसी महिलाओं को अपने खुद के छत पर बगीचा स्थापित करने में मदद करके अपने तरीके से एक छोटा कदम उठाया।

श्रीमती मीना बेन - सफल डेयरी फार्म के लिए एक रोल मॉडल

श्रीमती मीना बेन अतुल भाई पटेल, शादी के कारण 36 साल की उम्र में स्नातक की पढ़ाई छोड़ दी और गुजरात राज्य के आनंद जिले के पेटलाद तालुक शेखाडी गांव में अपने ससुराल में रह रही हैं। जब शादी हुई तो उनके ससुराल में दो भैंस थे। श्रीमती मीना बेन मौजूदा डेयरी को पूर्णकालिक उद्यम के रूप में विस्तारित करना चाहती थी और इसलिए पांच एचएफ गायों की खरीद करके वर्ष 2008 में डेयरी को वाणिज्यिक खेत के रूप में शुरू किया। वह डेयरी फार्म को वैज्ञानिक रूप से बनाए रखना चाहती थी और इसलिए, वह वाणिज्यिक डेयरी के बारे में और अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए एटीएमए में शामिल हो गई। एटीएमए के प्रोत्साहन से, श्रीमती मीना बेन समेत 40 कृषि महिलाओं ने एक आत्मीय समूह का गठन किया है। उन्होंने प्रशिक्षण और अन्य विस्तार गतिविधियों में भाग लेने के अवसरों को कभी भी छोड़ा नहीं। उन्होंने एटीएमए और अन्य विभागों द्वारा पुणे, नवसारी, गांधीनगर, हिम्मत नगर और एनडीडीबी आनंद जैसे विभिन्न स्थानों के लिए आयोजित कई एक्सपोजर यात्राओं में भाग लिया है और वाणिज्यिक डेयरी और चारा की खेती के बारे में बहुत सारी जानकारी प्राप्त किया है। वह धीरे-धीरे एचएफ, गिर क्रॉस, कंकराज इत्यादि जैसी विभिन्न नस्लों के 13 जानवरों को बढ़ाई है। वर्तमान में, उनके पास आठ दुधरु जानवर हैं और शेष पांच शुष्क अवधि में हैं। वह अपने जानवरों की चारे की आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक एकड़ भूमि में मक्का, ज्वार, बर्सिम जैसे चारा फसलों को बढ़ रही है। इसके अलावा, वह धान, गेहूं के भूसा और केंद्रित फ़ीड का उपयोग करती है। वह हरे और सूखे चारे को टुकड़ों में कटवाकर और यूरिया के साथ मिलाई चारा भंडारण के लिए विशेष रूप से निर्मित पक्का शेड में संग्रहित करती है। श्रीमती मीना बेन कहती हैं कि जानवरों को यूरिया द्वारा उपचार किया हुआ चारा और खनिज मिश्रण का उपयोग करके संतुलित चारा खिलाया जाता है। समयानुसार अनुसार टीकाकरण किया जाता है। हर दिन, जानवरों को स्नान किया जाता है और शेड साफ कर दिया जाता है। शेड को सूखने देने के लिए जानवरों को हर 12 घंटे के लिए शेड के अंदर और बाहर एक के बाद एक स्थानांतरित किया जाता है। वह गर्व से कहती है कि वैज्ञानिक रखरखाव के कारण, वह पिछले सात सालों में मस्टैटिस सहित अपने पशुओं को कोई बीमारी नहीं होने दीं।

श्रीमती मीना बेन ने खुशी से कहा कि वह सालाना दूध और डेयरी के उत्पादों से लगभग 12 लाख रुपये कमाती है। अपनी कमाई का विवरण देते हुए उन्होंने कहा की 150 लीटर / दिन के कुल औसत दूध के साथ 24 - 28 लीटर दूध / पशु / दिन मिल रहा है। वह 25 रुपये / लीटर की दर से अमूल डेयरी सहकारी को दूध बेचती है और लगभग 18% का वार्षिक बोनस भी मिलता है। वह बाछियों को रखती है और एक साल में औसतन दो गायों बेचती है और इस प्रकार 50000 से 60000/- रुपये एफवाईएम 50000/- रुपये और घी के मूल्य 17000/- से 20000/- साल में कमाती है।

डेयरी फार्म का वैज्ञानिक रखरखाव और उपलब्धि के कारण, उन्हें विभिन्न विभागों और संगठनों द्वारा मान्यता प्राप्त है। उन्हें कई पुरस्कार और नकद पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। वह सर्वश्रेष्ठ एटीएमए जिला पुरस्कार, एनडीडीबी से गोफाला पुरस्कार, महिंद्रा समृद्धि, इंदिरा कृषि पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ एटीएमए तालुक पुरस्कार इत्यादि प्राप्त हुई है। वह गर्व से कहती है कि इससे पहले मैं बेहतर डेयरी के बारे में जानने के लिए एनडीडीबी, विश्वविद्यालय, केवीके, एटीएमए आदि का दौरा करती थी। प्रथाओं, लेकिन, अब मेरे डेयरी फार्म देखने और मुझसे सीखने के लिए देश भर से कई अधिकारी और किसान मेरे पास आ रहे हैं। एनडीडीबी और एटीएमए अधिकारी अक्सर संसाधक व्यक्ति के रूप में मुझे आमंत्रित कर रहे हैं - पुरस्कार और मान्यता ने उन्हें अधिक से अधिक करने के लिए बहुत उत्साह और प्रेरणा दी है।

वर्ष 2012 -13 में एटीएमए के तहत फार्म स्कूल के लिए श्रीमती मीना बेन के डेयरी फार्म का चयन किया गया था, जिसमें 25 महिला किसान प्रशिक्षु प्रतिभागी थे। उन्होंने डेयरी फार्म शुरू करने के लिए अपने कुछ समूह के सदस्यों को प्रेरित किया है और पिछले साल उनमें से दो को पुरस्कार प्राप्त हुए थे। उसने महसूस किया कि डेयरी में उनकी सफलता के कारण परिवार के भीतर और बाहर उसके लिए सम्मान और मान्यता बढ़ गई। उन्हें विश्वास है कि एक ही कॉल में, वह किसी भी कार्यक्रम के लिए अपने गांव में लगभग 50 महिलाओं को संगठित कर सकती है। उद्घाटन के लिए उन्हें बॉम्बे विराट दूध से विशेष निमंत्रण मिला, श्रीमती मीना बेन खुश हैं कि पैसे से ज्यादा, उन्हें समाज के भीतर और बाहर विभिन्न राज्यों से सम्मान और मान्यता प्राप्त हुई और लोगों से बातचीत करने के कई अवसर मिले है। डेयरी उद्यम ने उन्हें सशक्त बनाया है, अपने आत्म विश्वास और आर्थिक स्थिरता को बढ़ाया है।

सतत खेती के लिए प्राकृतिक संसाधनों को समृद्ध करना

प्रसाद की खेती की मुख्य विशेषताएं:

i. जल संरक्षण, मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार, खेती की लागत में कमी पर काम करना शुरू किया।
ii. वर्षा जल संचयन के लिए खेत में खुदाई करना ताकि नमी को बनाए रखने व्यवस्था में वृद्धि
iii. मिट्टी को समृद्ध करने के लिए खरपतवार सहित नारियल के खोल और खेत के अपशिष्ट को गड्ढे में भर ढक दिया जात है।
iv. अपघटन में तेजी लाने के लिए सिंचाई के लिए प्रयुक्त जेट (छिड़काव) के साथ पानी का छिड़काव किया जाता है।
v. दबाव बढ़ाने और बिजली बचाने के लिए बूस्टर के रूप में छोटी पावर मोटर स्थापित की गई है।
vi. अलग-ललग दूरियों पर अंतर फसल के रूप में कोको की खेती को पॉम ऑचीई में लगाया है।
vii. मूत्र और गोबर का उपयोग करने के लिए पूरक उद्यम के रूप में गायों को पला जा रहा है।
viii. 25 एकड़ के खेत से कई फसलों की खेती करके प्रति वर्ष 18 लाख रुपये की सकल आय कमाते हैं।

पृष्ठभूमि:

50वें दशक के उम्र में भी प्रसाद शतक में हैं, मूल रूप से कृषि परिवार के है और रत्नागिरिनगर, सगीपुडू (पोस्ट और गांव), के कोटा मंडल से हैं। वह एक मैकेनिकल इंजीनियर है, कुछ वर्षों तक कंपनी के साथ बॉयलर अभियंता के रूप में काम कर चुके है। उनके पिता एक कृषि अधिकारी थे। सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी के साथ बोर कुएं के साथ 25 एकड़ उंची भूमि अपलैंड का मालिक है। उन्होंने डीजल खपत को कम करने और ओवरहेड्स को कम करने के लिए उन्होंने बड़े मोटर के स्थान पर बिजली पर चलने वाली टिलर और छोटे उपकरण खरीदे। वह नारियल केले (करपुराम किस्म) के साथ की खेती कर रहे हैं क्योंकि 12.5 एकड़ में 8x8 मीटर की दूरी के साथ कोको के साथ अंतर फसल के रूप में पॉम को चार एकड़ में चारा अलग, दो एकड़ में चारा और सब्जियां उगा रहे हैं।

उनका खेत गांव के नजदीक है। उनके खेत में लगभग 12 लोग नियमित रूप से काम करते हैं। उनका खेत समय-समय पर कई लोगों को आकर्षित करता है। वह पॉम ऑर्चर्ड्स के नेशनल एसोसिएशन के अध्यक्ष और गाय आधारित कृषि में भी सदस्य हैं। जो वर्ष 2011 के दौरान 120 किसानों के साथ रूप में शुरू हुआ। उन्होंने 2007 से बाहरी इनपुट का उपयोग करना बंद कर दिया और जैविक खेती जारी रखी। उन्होंने 2011 से गाय आधारित खेती भी शुरू की।

अभियंता के रूप में अपना काम छोड़ने और खेती शुरू करने का मूल कारण यह है कि वह किसी भी व्यक्ति पर निर्भरता के बिना किसान के रूप में रहना चाहता है। उसके प्रति वे श्री पालेकर जी को कृषि व्यवस्था की और साथ आकर्षित हो गया। कृषि की पालेकर प्रणाली, खेती शुरू करने से पहले प्रशिक्षित हो गई और कुछ खेतों का दौरा किया।

वर्षा जल और मिट्टी संरक्षण के लिए उपाय:

लगभग दो दशकों पहले, जब वह खेती में प्रवेश किया, तो उसने महसूस किया कि, पानी की कमी और पौष्टिक मिट्टी गैर-लाभकारी खेती के मुख्य घटक हैं। उन्होंने इन मुद्दों पर विचार किया, श्री पालेकर से जुड़ने के लिए, पालेकर सिद्धांतों के आधार पर खेती शुरू की।

हाइलाइट करने के लिए, पालेकर की खेती की व्यवस्था के कुछ सिद्धांत हैं:

i. शून्य बजट खेती - बाहरी इनपुट के लिए पैसे खर्च किए बिना
ii. गाय का गोबर और मूत्र, चने या किसी भी दाल का आटा और मिट्टी से तैयार किया गया जीवामृत, बीजामृत आदि जैसे प्राकृतिक इनपुट
iii. पलवार करना
iv. विभिन्न फसलों को बढ़ाना

उन्होंने पानी के संरक्षण के लिए 2-6 फीट की लंबाई की खाइयों को रास्ते एवं मेढ़ो पर खुदवाकर और उन्हें खरपतवार गोबर से भर दिए। पूरे खेत में पौधों के बीच नौ इंच की गहराई के साथ उथले गड्ढे खोले और उन्हें नारियल के गोले से भर कर बारिश के पानी के लिए मल्च के रूप तैयार किए है। प्रसाद ने मिट्टी को समृद्ध करने के लिए पाम और नारियल के खतों में कोको के पत्ते अपघटन के लिए भी व्यवस्था की। इन उपायों के माध्यम से वे अपने खेत में अतिरिक्त वर्षा जल संरक्षित करने में सक्षम हुए है और विघटित खेत अपशिष्ट को शामिल करने के माध्यम से मिट्टी की उर्वरता में सुधार कर सकता है।

वे लगभग रु. 30,000 सालाना खुदाई पर खर्च करते है। उनको अगर सरकार द्वारा वित्तीय सहायता दी जाती है, तो लोग इन उपायों को तेजी से अपना सकेगें।

जल उपयोग दक्षता में सुधार के लिए किए गए उपाय:

प्रसाद ने सूक्ष्म सिंचाई की स्थापना, बारिश के पानी को इकट्ठा करने गड्ढे खोदना जैवी कार्बनिक कार्बन के साथ मिट्टी की स्वास्थ्य को बनाए रखना अनुकूलित किया है, सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली को बढ़ाने और क्षेत्र में पौधों के बीच उथले गड्ढे बनाने के लिए मौजूदा पंपिंग प्रणाली के बूस्टर के रूप में दो एचपी मोटर स्थापित किया है। वाष्पीकरण घाटे को कम करने के लिए मल्च के रूप में कार्य करने के लिए पौधों के कचरे से ढंक दिये है।

वर्ष 1995 से वे विशेष फसलों की सिंचाई विशेष रूप से न्यूनतम पानी का उपयोग कर रहे हैं, सभी फसलों के लिए सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली का निर्माण कर रहे है। उन्होंने बगीचे में ड्रिप के बजाय जेट स्थापित किया ताकि पत्ती के कूड़े पर पानी छिड़कने के लिए पानी प्रदान करने के साथ-साथ तेजी से अपघटन के लिए पौधों पर पानी का छिड़काया करते है।

वर्ष 1 99 0 के दौरान उन्होंने 15 एच पी बिजली के मोटर को 12 एकड़ के बगीचे में पानी पंप करने के लिए रखा। आम तौर पर यहाँ के किसान हर पांच एकड़ के लिए 15 एचपी का उपयोग करते हैं। प्रसाद ने एक और बोर कुएं और मोटर स्थापित करने की बजाए दक्षता बढ़ाने के लिए मौजूदा सिस्टम को बूस्टर के रूप में तीन एचपी मोटर जोड़ा है। तीन एचपी मोटर के अतिरिक्त, सिंचाई दक्षता 60% की वृद्धि हुई। इस विधि से उन्होंने कहा कि उन्होंने एक और सिंचाई प्रणाली विकसित करने और बिजली बचाने के लिए आवश्यक लाखों निवेश को बचाया है। लगभग छः हजार के निवेश के साथ उन्होंने कुछ लाख रुपये के निवेश से परहेज किया है। इस विधि ने जेट सिंचाई को क्षेत्र में तीन फीट से आठ फीट गीला करने में भी वृद्धि की।

उच्च लाभ प्राप्त करने के लिए पॉम और नारियल के बागों में अंतर फसल के रूप में कोको की खेती:

किसान ने कोको और केले को पॉम और नारियल के बागों में अंतर फसल के रूप में डाला जैसे भूमि, पानी और श्रम से लाभ बढ़ाने के लिए उगाया है। 1997 के दौरान वह ताड़ के बगीचे में कोको बढ़ गया और उसने दावा किया कि वह ऐसा व्यक्ति था जिसने जिले में पहली बार इस प्रणाली को शुरू किया था। पॉम से खेती करने वाले सभी किसान अब आयात के परिणामस्वरूप पॉम के तेल की कीमतों में कमी के कारण घाटे का सामना कर रहे हैं। लेकिन प्रसाद अभी भी मुनाफा कमा रहे हैं क्योंकि उन्होंने पॉम में कोको का अंतर फसल के रूप में डाला है। उत्पादन की कम लागत और प्रजनन क्षमता और निरंतर उत्पादन में सुधार के कारण अच्छी उपज प्राप्त करने से आय मिलती है।

तीसरे वर्ष से उन्होंने प्रति वर्ष 50 किलोग्राम कोको और चौथे वर्ष से 200 किलोग्राम प्रति वर्ष फसल पाया है जिसे प्रति किलो ग्रम रू.187 के दर पर भेजा और 10 टन प्रति एकड़ की पॉम उपज पाया है। उनका कहना है कि, विभाग ने अपनी सफलता देखी है और वर्ष 2001 से भी पॉम बागानों में कोको पैदा करने के लिए सब्सिडी बढ़ाया है। बागवानी विश्वविद्यालय को पॉम के साथ कोको की खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया है।

उन्होंने पाया कि, पॉम बागान में नौ मीटर की दूरी के साथ कोको की वृक्षारोपण ने आठ मीटर की दूरी की तुलना में अच्छी चंदवा वृद्धि, उच्च उपज और समृद्ध मिट्टी दी है। बीज निकालने के बाद, कोको फलों से लुगदी का उपयोग मवेशी फ़ीड के रूप में किया जा रहा है। वह पॉम के पत्तों के एक मीटर हिस्से का भी आधा हिस्सा है और फ़ीड के समान उपयोग करता है।

लाभदायक और सतत खेती:

किसान का मानना है कि, वर्षो से किसानों को ऋण उधार लेने के लिए दक्ष बनाना नहीं चाहिए, सरकार से सब्सिडी की उम्मीद नहीं करना चाहिए और संस्थानों से प्रौद्योगिकी की सहायता नहीं लेना चाहिए, अगर वे सिद्धांतों के साथ काम करते हैं तो वे आत्म निर्भर बनेगा।

उन्होंने मिट्टी के स्वास्थ्य को समृद्ध करने के लिए गाय और पौधे आधारित उत्पादों के उपयोग किया, कीट और बीमारियों का प्रबंधन करने के लिए गायों की देखभाल करने जैसी कई रणनीतियों को अपनाया है। 10 वर्षों में किए गए अनेक प्रयासों से वे मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रख सका। उसके खेत में मिट्टी का कार्बन 0.90 से अधिक है अन्यथा यह पहले 0.30 से कम था। उनकी प्रथाओं ने न केवल उत्पादन की लागत को कम किया बल्कि बेहतर मिट्टी की स्वास्थ्य के कारण लंबे समय तक गुणवत्ता स्थिर में वृद्धि का एहसास हुआ।

जोखिम को कम करने और लाभ में वृद्धि करने के लिए अपनाई गई रणनीतियों में से एक को पॉप और नारियल के बगीचे में अंतर फसल के रूप में बढ़ाना, नारियल के क्षेत्र में केला, बागवानी विभाग से समर्थन के साथ नीबूं, सब्जियां (डोंडा) जैसी कई फसलों को बढ़ रहा है पेड़ की प्रजातियां जैसे की हरा चारा की खेती के लिए पशुपालन विभाग के समर्थन के साथ मिलकर बंड पर चारा उगा रहा है। वह गर्व से कहता है कि, उसे नौ टीक पौधों के लिए नौ लाख रुपये की पेशकश की गई थी, जिसे वह अपने खेत के बंडो पर उगाया था। यद्यपि उन्होंने इस समय टीक पौधों को बेच नहीं दिया लेकिन कृषि और अन्य संबद्ध गतिविधियों से प्राप्त आय के अलावा, उनके लिए यह एक बहुत अच्छा स्रोत है।

गाय और पौधे आधारित तैयारी के उपयोग के साथ जैविक खेती को अनुकूलित करने वाले इनका एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं। उन्होंने गाय के गोबर का उपयोग खेत के अपशिष्ट को अपनाने के लिए किया है और गाय आधारित उत्पादों को छिड़ककर कीट और बीमारियों के लिए पौधों की सहिष्णुता को प्रेरित किया है। वह समय-समय पर नीम का तेल और जीवनप्रुथ स्प्रे करता है। वर्तमान अभ्यास ने बाहरी इनपुट पर व्यय कम कर दिया है। एक व्यय को कम करने के माध्यम से दूसरे ऋण बोझ और मानसिक तनाव को भी कम करना है। वह गर्व से कहता है कि उसने खेती की लागत को पूरा करने के लिए केवल ऋण के लिए बैंक जाना और अपनी कृषि आय का हिस्सा खर्च करना बंद कर दिया है।

निम्न कारकों ने उनकी सफलता में योगदान दिया:

i. जैविक खेती पर विश्वास
ii. पालेकर के सिद्धांतों का अनुपालन
iii. निरंतर दृढ़ संकल्प।
iv. विभिन्न कृषि प्रथाओं पर निरंतर परीक्षण
v. सीखने, अभ्यास करने और सलाह देने की क्षमता।
vi. खेत में व्यक्तिगत उपस्थिति।

प्रभाव:

i. मृदा प्रजनन क्षमता में वृद्धि (मिट्टी में कार्बनिक सामग्री)
ii. अन्य लोगों की तुलना में केवल 30% पानी के साथ वर्षा जल घुसपैठ और फसलों को सिंचाई।
iii. 25ac अपलैंड फार्म में सालाना 18 लाख रुपये की कमाई। वह मजदूरी मजदूरी के लिए 30% आय, मशीनरी के रखरखाव के लिए 15%, 30% घरेलू खर्च और शेष 25% शुद्ध लाभ संपत्ति खरीदने और खेत में पुनर्निवेश के लिए उपयोग किया जाता है।
iv. वह अपने पांच एकड़ नीबूं और केले बागान से लगभग दैनिक आधार पर आय प्राप्त करता है।
v. नुकसान का कोई खतरा नहीं और खेती का आनंद लेना।

भविष्य की योजनाएं:

i. जैवी खेती के रूप में अपने खेत के प्रमाणीकरण करवाना।
ii. विजयवाड़ा में जैवी उत्पादों को बेचने के लिए खुदरा आउटलेट खोलना।
iii. किसानों के समूह को सब्जियों के जैविक उत्पादन के लिए व्यवस्थित करने की योजना बनाई गई है।

समग्र कृषि - एक एकड़ भूमि में धान, मछली और सब्जियां

पृष्ठभूमि:

यह ज्ञात है कि, धान की खेती खेत में की जाती है और मछली तालाबों में होती है, जबकि श्री कुमुदावल्ली गांव के अंगराजू सत्यनारायणाराजू, पलकोडेरू मंडल, पश्चिम गोदावरी जिला, आंध्र प्रदेश एक एकड़ भूमि में बंड पर धान और मछली (एक साथ) और सब्जियां बढ़ा रहे है। सत्यनारायणाराजू का मुख्य व्यवसाय कृषि है। वह 10 एकड़ भूमि के साथ एक बड़ा किसान है, उनके पास प्रोक्लेनर, ट्रैक्टर और अन्य कृषि मशीनरी है।

श्री ए श्रीनिवास राव, सहायक कृषि निदेशक, भीमवारम, पश्चिम गोदावरी जिला के एटीएमए के समर्थन से श्री राजू के खेत में प्रदर्शन का आयोजन किया गया । एडीए ने कुछ साल पहले सेंट्रल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीआरआरआई), कटक, उड़ीसा में भाग लिया । प्रशिक्षण के आधार पर इस अवधारणा को बढ़ावा दिया है। सफलतापूर्वक केवीके के तकनीकी मार्गदर्शन और अभिनव गतिविधियों की श्रेणी के तहत एटीएमए से वित्तीय सहायता (20000 / -) के साथ मत्स्य पालन पर डेमॉन्स्ट्शन सफलतापूर्वक की गई।

समग्र खेती का विवरण:

I. भूमि तैयारी:

1. मछली की खेती के लिए 20 सेंट के क्षेत्र में 2 मीटर चौड़ाई और 1 मीटर गहराई का एक गड्ढ़ा खोदना है।

2. गड्ढ़ा में से हटाई गई मिट्टी के साथ 2 मीटर चौड़ाई वाले क्षेत्र के चारों ओर 20 सेंट के साथ एक बंड बन गया है।

3. क्षेत्र के केंद्र में शेष 60 सेंट धान की खेती के लिए तैयार किया गया है।

II. उत्पादन गतिविधियां:

1. रबी (जनवरी, 2014) के दौरान 60 सेंट (क्षेत्र के बीच में) में धान को प्रत्यारोपित किया गया है। खरीफ में धान की दूसरी फसल (जुलाई 2014), तीसरी फसल (दिसंबर, 2014) और चौथी फसल (जुलाई, 2015) जो नवंबर, 2015 में कटाई के लिए तैयार हो गया है।

2. प्रत्यारोपण पर व्यय बचाने के लिए ड्रम सीडर का उपयोग करके धान का सीधा रोपण किया गया है।

3. किसान ने वर्मी कंपोस्ट के दो क्विंटल का इस्तेमाल किया है, कम से कम उर्वरक अर्थात एसएसपी (एक क्विंटल), पोटाश लवण (10 किलोग्राम) और यूरिया (15 किलोग्राम) जोताई के समय डाला जाता है । उन्होंने एमटीयू 1010 और पीएलए 1100 धान के बीजों का उपयोग किया है। नीम के तेल के तीन बार पिछकारी और स्यूडोमोनास फ्लोरोसेंस का, 300 ग्राम के दो स्प्रे को छोड़कर। हर समय धान क्षेत्र में कोई अन्य रसायनों का उपयोग नहीं किया गया।

मछली की खेती:

मछली के किस्मों में से केवीके वैज्ञानिकों की सलाह के अनसार उन्होंने शीलावथी (800 संख्या में), बोचा (200 संख्या में) और मोसा (100 संख्या में) फिगंरलिंग का उपयोग किया जिसका वजन 50- 100 ग्राम है।

हर दूसरे दिन 5 किलो चावल की चोटी (हर वर्ष 1000 किलो प्रित वर्ष), पशु खाद 200 किलो और मछलियों के आहार के रुप में सीमित मात्रा में अजोला डाला है। अजोला डालने से वह न केवल मछलियों का आहार बनेगा परंतु धान की खेत में वातावरण से प्राप्त नाइट्रोजन को सोखकर धान के खेत में सफाई करता है।

इस क्षेत्र में यह भी देखा जाता है कि, धान के खेतों में स्वतंत्र रूप से चलने वाली मछलियां लार्वा और अंडे को खाकर स्वाभाविक रूप से कीट नियंत्रिण कर रहे थे। 20 सेंट के क्षेत्र में एक वर्ष में किसान ने 820 किग्रा मछली का, जो भीमवारम बाजार में बेचा गया था।

कृषि बंड पर बढ़ती सब्जियां:

I. किसान ने एकड़ की भूमि के चारों ओर बंडों पर केला, मिर्च, भिंडी, टमाटर और पत्तेदार सब्जियों की विभिन्न किस्में उगाई हैं। इसके अलावा बंडों पर नारियल के पेड़ (20 वर्ष पुराना) भी है।

II. मध्यम और दीर्घ अवधि में किसान की आमदनी के पूरक के लिए कुछ महीनों पहले से पपीता, ड्रमस्टिक आदि का वृक्षारोपण किया गया है।

III. पूरक आय प्राप्त करने और परागण में सहायता के लिए मधुमक्खी बॉक्स भी लगाया है और खाद तैयार करने के लिए वर्मी-कमपोस्ट यूनिट भी तैयार किया गया है।

IV. हाल ही में, उन्होंने स्थानीय सामग्री का उपयोग करके मछली के ट्रेंथ पर पक्षियों के लिए एक छोटा घोंसला बनाकर अपने खेत में स्थानीय कुक्कुट पक्षियों को भी जोड़ा है। उन्होंने अपनी आय के बढ़ाने के लिए विविध बकरियां (3 नंबर) भी शामिल की हैं।

V. गतिविधियों के उपरोक्त संयोजन के साथ, अर्थात 60 सेंट में धान, खेतों के ट्रेंथों में 20 सेंट में मछली की खेती, ने उच्च पैदावार दी है और किसान को महत्वपूर्ण आय दी है।

VI. वर्ष 2014 में एक एकड़, डेमॉन्स्ट्रेशनों और बंडो पर सब्जियों द्वारा उन्हें अधिक आय की प्राप्ति हुई।

क्र.सं.	विवरण	रिटर्न (रु.)	व्यय (रु.)	शुद्ध लाभ (रु.)
1	रबी में उत्पादन चावल (17.25क्यूटी) .	25300	6300	19000
2	ख में चावल का उत्पादन 15.75 क्यूटीएल)	21000	5500	15500
3	धान की खेती से शुद्ध लाभ	46300	11800	34500
4	सब्जियों से शुद्ध लाभ - केले की खेती (150 पौधों) ने 150 बंच x रुपये 200 / गुच्छा दिया है	30000	1200	28800
5	सब्जियां - पत्तेदार विविधता, महिलाओं की उंगलियों, मिर्च, टमाटर आदि	4000	120	3880
6	नारियल के पेड़	1100	0	1100
7	मछली की खेती (820किलो)	80000	29000	51000
कुल		161400	42120	119280

सूचना का स्रोत: श्री अंगराजू सत्यनारायणाराजू, कुमुदावल्ली गांव,

पलकोडेरू मंडल, पश्चिम गोदावरी, आंध्र प्रदेश

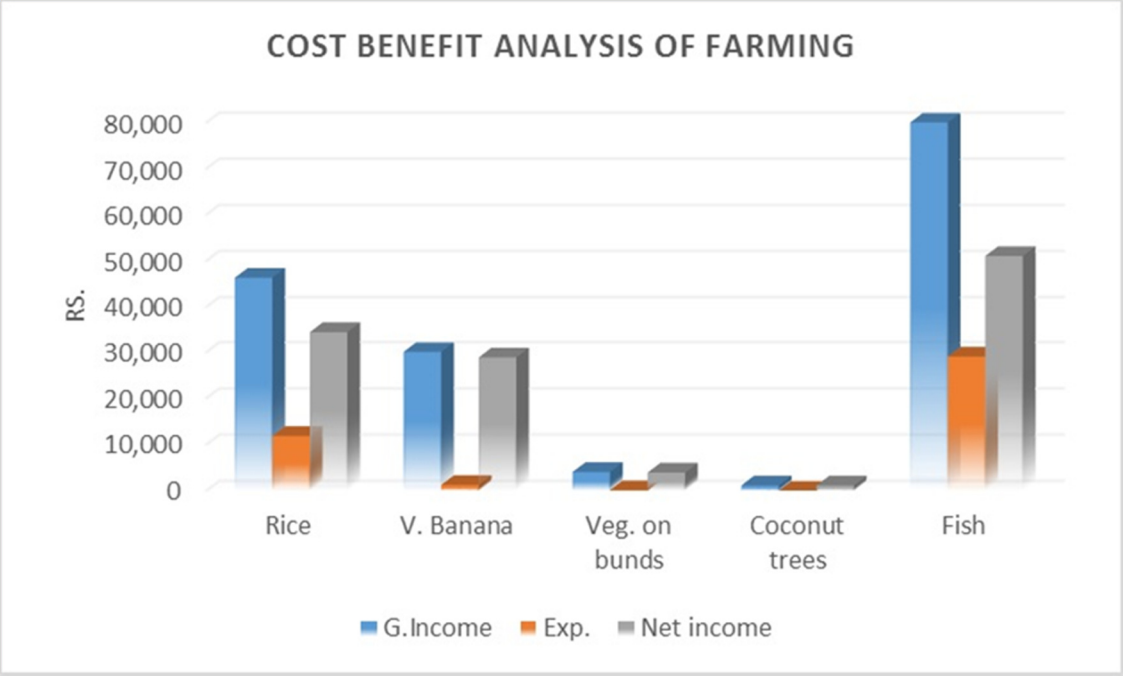

यह तालिका और ग्राफ से देखा जा सकता है कि, पहले वर्ष में, किसान ने शुद्ध लाभ अर्जित किया है। एक एकड़ जमीन से 1.1 9 लाख। औसतन, प्रत्येक सीजन में 16 क्विंटल धान की कटाई की जाती है, जो पूरे साल में एक छोटे से परिवार की खपत के लिए पर्याप्त है। अकेले मछली की खेती ने किसान को उच्चतम आय दी है।

केला (सब्जी) और अन्य सब्जियों के 150 पौधों ने किसान को अपने परिवार के भोजन और नकद जरूरतों को पूरा करने के लिए निरंतर आय दी है। लगात-लाभ अनुपात 1: 2.60 के रूप में काम करता है, इसका मतलब है कि डेमॉनस्ट्रेशन में निवेश किए गए प्रत्येक रुपए ने कुल निवेश के लिए 2000 रुपये की एटीएमए सब्सिडी सहित भी किसान को 2.60 रुपये की आय दी है। यह अनुमान लगाया गया है कि किसान को दूसरे वर्ष से आय में वृद्धि होगी।

मुख्य विशेषताएं:

I) खेती में ही वर्मी-कंपोस्ट, पौधे आधारित कीटनाशक प्रमुख इनपुट का उत्पादन करने से खेती की कम लागत में कमी हुई है। II) धान, मछली और सब्जियों के साथ समग्र खेती घरेलू भोजन और नकद जरूरतों को पूरा करती है। III) उद्यमों के बीच सिम्बियोटिक संबंध इनपुट प्रबंधन में मदद करता है। IV) खपत के लिए सुरक्षित खाद्य उत्पादन जहां में कोई रसायन नहीं छिड़काया गया। वी) गहरे काले मिट्टी में नहर सिंचाई के साथ छोटे और सीमांत किसानों के लिए उपयुक्त है गहरे काले मिट्टी में नहर सिंचाई।

योजना:

I) वे अपने खेत में पशुओं के कुछ और किस्में पेश करने जा रहे हैं II) किसान ने कुक्कुट, बतख, बकरियों और भेड़ों के लिए स्थायी संरचना बनाने के लिए खेत के एक तरफ तीन मीटर खंभे बनाया। III) पेड़ की छाया के नीचे, वे हल्दी और अदरक की खेती करने जा रहे है IV) वे अब अन्य किसानों को समग्र खेती पर प्रशिक्षित करने के लिए तैयार है।